फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 363 सितम्बर 2018

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

बोलने की क्षमता सुनने की क्षमता से आती है सुनने की क्षमता बोलने की क्षमता से आती है

रेलवे फाटक पर खड़े थे। आने-जाने वालों से बातचीत अच्छी होती है। इस बार बारिश की वजह से बिखरी हुई रही।

मेरी भी दो-चार मिलने की जगहों पर बारिश ने थोड़ा उद्यम मचा दिया। लगता है शहर बरसात के लिये प्यासा है और बरसता है तब शहर बेचैन हो जाता है।

एक युवा अपने बच्चे को गोदी में ले कर टहल रहे थे। बहुत रोचक एक बात बताई। एकदम बारिश के बरसने जैसा था।

तो कोई बेचैन हुआ?

ऐसा ही कुछ समझो। वो बता रहे थे कि कोर्ट द्वारा न्यूनतम वेतन उतारने पर कम्पनी मन्शा में थी तनखा कम करने की। हमें भनक लग गई। चटपट कॉल फैल गई।

क्या? फिर क्या हुआ?

फिर वही सटीक। तीन कार्यस्थलों के सभी साथी कम्पनी की चौपाल में हाजिर। चौपाल में चार सौ को देख कर कम्पनी के मुखिया में घबराहट। बेचैनी। आश्वासन दिये। स्वर और शरीर में कम्पन थी, गम्भीरता भी थी।

यह तो होना ही था। निर्णायक एक्शन। सामुहिक फोर्स। नतीजा तत्काल। आज के यह सबसे कारगर रास्ते हैं। मैंने अपने कार्यस्थल पर देखा है और अनेक कार्यस्थलों से खबर मिली हैं।

बच्चे को सुला रहे थे पर उत्तेजित थे। चेहरा दमक रहा था। बहुत खुश थे।

यह जो रूप है ना जिसमें दमक हो, गर्व हो, सामुहिक का रंग हो, यह उसके बच्चे तक कैसे पहुँचेगा?

मतलब? बच्चा तो बहुत छोटा है।

आज छोटा है तो क्या हुआ? कुछ वर्षों में देखेगा माहौल, समाज के इज्जत के रूल्स, उनका बनना, उनका टूटना। गायब हो जाना।

मेरी माता-पिता से कभी बात हो ही नहीं पाई। लगता है कभी वो जबरन दयनीय या मजबूर का रूप ले लेते हैं। सामुहिक के ओज जो उनकी जिन्दगी में आये ही होंगे उनका रंग मेरे सामने शायद ही कभी लाये होंगे।

यह आप एक गहरे तार को छू रहे हो। यह शब्दहीन खरोंचों के स्थान हैं। दोनों पीढी की तरफ से यह निःशब्द स्थान है।

आप भी अपने बच्चों से बात नहीं कर पाते क्या? बुरा मत मानना, मुझे लगा कि आपके बच्चे युवा हो गये होंगे और काम में लग गये होंगे।

बुरा मानने की बात नहीं है। मेरे बच्चे बड़े हो चुके हैं और यह गुत्थी और गहरी दीखने लगी है। एक कहानी सुनाता हूँ। मेरे एक सहकर्मी ने कहा कि सीनियर मैनेजर ने इंजीनियर बने मेरे बेटे की पीठ थपथपाई और बोले कि आप मजदूरी से बच गये। हम सब बैठे थे। लगा कि सब को चाँटा पड़ा है। हमारे बच्चों की तरक्की की खुशी और हमारे जीवन की तौहीन एक साथ चलती है।

आप इस तौहीन को फाइट तो नहीं कर पाये। चलिये दूसरे ढँग से पूछता हूँ। आप इस तौहीन को फाइट कैसे करेंगे? आपका जीवन तुच्छ है यह तो आप सब आपस में बोलते रहते हो। मेरे पिता से तो मुझे इस बात पर बहुत गुस्सा है। उनके दोस्तों से नाराजगी है कि वो बार-बार धार्मिक भाव से इस तुच्छता का वर्णन करते हैं।

हा-हा! आप तो बहुत गुस्से से बड़े हुये। एकतरफा नहीं है यह। कोई मजदूर नहीं होना चाहता। होना पड़ता है। यह एक जटिल कशमकश है। आप अपनी गरिमा, मौजूदगी, और क्षमता तथा कार्य स्थल पर सामुहिक बल के अहसास को रखना भी चाहते हो लेकिन बच्चों को उनसे दूर भी रखना चाहते हो। यह दूरी कब दायरा बन जाती है इसका पता नहीं चलता।

मैं आपकी इस समझ की सराहना करता हूँ। लेकिन केवल मजबूरी को आधार बना कर रिश्तों का जो बुनना है उस पर मेरा गुस्सा है। घातक है यह।

मैं तो कह रहा हूँ कि घातक है। लेकिन आपका द्वेष, क्रोध तो गुत्थी को उलझा ही रहा है। खोल नहीं रहा है। कैसे आप बड़े हुये हो उसको तो आप बदल नहीं सकते। अब कैसे जीना है उस पर हम असर डाल सकते हैं। इसके लिये नये वर्णन की कोशिश करें।

घुमा फिरा कर आप बात वहीं पर ले आये। मेरा गुस्सा गलत है और वर्णन बदल दो।

और कोई उपाय है तो बोलो। नहीं तो मुझे तो लगता है कि सब राख हो जायेंगे।

अब डरा रहे हो। लग रहा है कि आपकी नहीं सुनी तो राख हो जायेंगे।

हा-हा! नहीं, ऐसी बात नहीं है।

चलो मैं टैस्ट करके कुछ दिन बाद मिलता हूँ। मैं मेरे कई साथियों से पूछता हूँ कि वो अपने माता-पिता और उनके दोस्तों तथा सहकर्मियों के जीवन के कुछ शानदार पलों को सुनें। फिर पूछें कि पहले यह पल सुनाई क्यों नहीं दिये।

सरकारी है दिल्ली जल बोर्ड

पूरी दिल्ली में करीब 1000 सीवर सफाई कर्मी हैं। दिल्ली जल बोर्ड ने इन सब वरकरों को ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखा है। दिल्ली के मुख्य मन्त्री दिल्ली जल बोर्ड के अध्यक्ष हैं।

सीवर सफाई वरकरों की तनखा 9000 रुपये। एक हजार मजदूरों में एक की भी ई एस आई तथा पी एफ नहीं हैं।

कई मौतों के बाद सीवर के अन्दर उतार कर सफाई करवाना इधर बन्द है। ऊपर से लम्बे वाले फावड़ों से वरकर सफाई करते हैं। सीवर के ढक्कन जाम होते हैं। ढक्कन हटाने के लिये तीन फुट की चाबी में लगे कुण्डे इस्तेमाल करते हैं। जब-तब कुण्डे टूट जाते हैं।

चोटें लगती रहती हैं, गम्भीर चोट भी लगती हैं। चोट लगने पर ठेकेदार कम्पनी, जे ई, जेडी, सब को पता चल जाता है। किसी वरकर के ज्यादा चोट लगने पर इक्ट्ठे हो कर मजदूर सरकारी साहबों और ठेकेदार कम्पनी वालों को बोलते हैं। दोनों कहते हैं कि करेंगे-करेंगे लेकिन वे कुछ नहीं करते। घायल वरकर अपने पैसों से इलाज करवाते हैं।

ई एस आई अस्पताल है क्या ?

आई एम टी मानेसर में एक मजदूर की 13 अगस्त को तबीयत खराब हुई। तेज बुखार में भी आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 स्थित ई एस आई अस्पताल में 14 अगस्त को सुबह 5 बजे लाइन में लगा। नम्बर आया 11 बजे। एक इंजेक्शन लगाया, एक गोली दी और बोले जाओ आराम हो जायेगा। भर्ती नहीं किया। रक्त की जाँच नहीं की।

तबीयत ज्यादा बिगड़ने पर 14 को ही साँय रेवाड़ी गया। कलावती अस्पताल में खून की जाँच की। डेन्गू था। प्लेटलेट बहुत कम थी। भर्ती कर लिया और 14 से 18 अगस्त तक अस्पताल में इलाज चला।

लौट कर 20 अगस्त को फिर ई एस आई अस्पताल गया। कागज दिखाये और रैस्ट लिखने का आग्रह किया। डॉक्टर ने रैस्ट नहीं लिखा।

आई एम टी मानेसर में ही इधर एक परिचित मजदूर का टायफाइड बिगड़ गया। वह ई एस आई अस्पताल गया। भर्ती नहीं किया और बोले कि ठीक हो। तबीयत ज्यादा खराब थी। वह गाँव चला गया। पता नहीं बचेगा कि नहीं।

बाउन्स चेक वापस क्यों करते हैं?

✶**कृष्णा लेबल** (82 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 6 महीने काम करने के बाद नवम्बर 2017 में नौकरी छोड़ी। काम किये 25 दिन के पैसों के लिये रिजाइन लिया। जनवरी में चेक दिया। बाउन्स हो गया। बैंक द्वारा लौटाये चेक को ले कर गया तो चेक ले कर बोले कि नगद दे देंगे। पैसे माँगने पर रिजाइन लिखने को कहा। इस्तीफा फिर लिख कर दे दिया। पैसे माँगने पर इस प्रकार 5 बार रिजाइन लिखवा कर ले चुके हैं। अगले दिन, अगले महीने दे देंगे कहते-कहते अगस्त-अन्त तक पैसे नहीं दिये हैं।

✶**अनन्या इन्टरप्राइजेज** (वाई-3 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री के सब मजदूरों को इस जनवरी में हिसाब दे दिया। हिसाब किसी को एक चेक में तो किसी को दो चेक में दिया। कई वरकरों के चेक बाउन्स हो गये। मई में फैक्ट्री फरीदाबाद में डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट में शिफ्ट। अगस्त-अन्त में भी बाउन्स चेकों वाले कई मजदूर अपने हिसाब के लिये यूँ ही घूम रहे हैं।

चेक का प्रावधान पहले आमतौर पर साहब लोगों के बीच था। इसलिये चेक बाउन्स होने पर कानून में काफी सख्त प्रावधान हैं। चेक बाउन्स होने पर 15 दिन के अन्दर धारा 138 के तहत न्यायालय में मामला दायर करने पर चेक देने वाले के लिये परेशानी पैदा हो जाती है।

इधर चेक मजदूरों के लिये सामान्य बन गया है। लेकिन चेक बाउन्स होने पर काफी वरकर चेक देने वालों के पास पहुँच जाते हैं। देने वाले चेक वापस ले लेते हैं और नगद देने का झाँसा दे कर लटका देते हैं।

चेक बाउन्स होने पर 15 दिन के अन्दर अदालत में धारा 138 में केस करना बनता है।

क्या पी एफ कल्याणकारी है ?

मजदूरों के लिये पी एफ को कल्याणकारी कानून कहा जाता है। वास्तविकता क्या है ? तथ्य क्या कहते हैं ?

✶**शिवांक उद्योग** (671-673 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) गारमेन्ट फैक्ट्री में डी. एम. आर. के. ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे मजदूर पूरे महीने ड्युटी करते हैं परन्तु महीने में उनकी 10-15 हाजरी दिखा कर पी एफ राशि जमा की जाती है।

✶**प्रोकास्ट** (18 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ऑटो पार्ट्स बनाते 100 मजदूरों में 35-40 की ई एस आई तथा पी एफ है। और जिन वरकरों की तनखा से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं उनका पी एफ बहुत कम जमा करते हैं। तनखा से पैसे 10-12 महीने काटे हैं तो 1-2 महीने के पैसे पी एफ कार्यालय में जमा करते हैं। नौकरी छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म मैनेजमेन्ट गलत भर देती है। कमी बता कर पी एफ कार्यालय फार्म लौटा देता है। चक्कर काट कर कई वरकर तो फण्ड के पैसे छोड़ देते हैं।

✶**प्लस मैग्नेटिक एण्ड पावर इलेक्ट्रोनिक्स** (49 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में नौकरी छोड़ने के बाद पी एफ राशि निकालना पहाड़ उठाने समान है। कई चक्कर कटवाने के बाद कम्पनी फण्ड निकालने का फार्म भरती है। और उसमें कमी छोड़ दी जाती है। भविष्य निधि कार्यालय फार्म में कोई न कोई कमी निकाल कर तीन बार वापस कर चुका है। चौथी बार फार्म भरवाने के लिये 6 महीने से फैक्ट्री के चक्कर काट रहा हूँ.....

✶**ब्लैकबेरी** (162 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में किसी वरकर को पी एफ नम्बर नहीं बताया है। नौकरी छोड़ने के बाद कई चक्कर कटवा कर फण्ड निकालने का फार्म मैनेजमेन्ट भरती है। पैसे बहुत कम निकले की शिकायत करने फैक्ट्री जाते हैं तो मैनेजमेन्ट कहती है कि बाद में और भेज देंगे..... फैक्ट्री में पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दा — मात्र दो सफाईकर्मी हैं।

✶**आर एल खन्ना** (401 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में होम फर्निशिंग का काम करते करीब 200 वरकों की कच्चे रजिस्टर में इन्ट्री करते हैं। ई एस आई तथा पी एफ 20-22 की ही हैं।

केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >
चीफ विजिलैन्स पी एफ < cvo@epfindia.gov.in >

देनदारी किसकी ?

✶नोएडा फेज-2 में हौजरी कॉम्पलैक्स में बी-43, 44 स्थित **वीयरवेल** गारमेन्ट फैक्ट्री में काम करता एक प्रैसमैन अप्रैल-अन्त में छुट्टी ले कर गाँव गया। लौटा 20 जुलाई को और अपनी तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे लेने वीयरवेल फैक्ट्री गया। उसे 25 जुलाई को आने को कहा। पैसे लेने पहुँचा तो बोले कि कोई दूसरा कोई साइन करके तुम्हारे पैसे ले गया है। जाँच करके दे देंगे। सहकर्मियों ने वीयरवेल मैनेजमेन्ट से कहा और दूसरी जगह काम पर लग गये वरकर ने दिहाड़ी भी छोड़ी अपने पैसों के लिये। इधर ठेकेदार कम्पनी जिसके जरिये वीयरवेल फैक्ट्री में वरकर को रखा था उसने पैसे देने से इनकार कर दिया है। वीयरवेल मैनेजमेन्ट ने भी वरकर के पैसे देने से इनकार कर दिया है।

✶**ऋचा ग्लोबल** (215 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में **सर्विस मास्टर क्लीन** कम्पनी के जरिये जून में 7 लोग रखे। एक महीने बाद ठेका तोड़ दिया। सुपरवाइजर को तनखा दे दी लेकिन एक महिला मजदूर और 5 पुरुष वरकों को तनखा नहीं दी है। वह कहती है कि वह देगी और वह कहती है कि वह देगी के चक्कर में मजदूरों को जून की तनखा अगस्त-अन्त तक नहीं।

कम्पनियों के अपने कानूनों के अनुसार मुख्य नियोक्ता के नाते वरकरों की तनखा की देनदारी वीयरवेल और ऋचा ग्लोबल कम्पनियों की है।

रिजाइन क्यों लिखते हैं ?

— फैक्ट्री में 100 से ज्यादा मजदूर हैं और फैक्ट्री बन्द करनी है अथवा कुछ मजदूरों को निकालना है तो कम्पनी को तीन महीने पहले नोटिस लगा कर सूचना वरकरों को देनी होगी अन्यथा मजदूरों को नौकरी समाप्ति पर तीन महीने की तनखा नोटिस पे के तौर पर देनी होगी।

— फैक्ट्री में 100 से कम मजदूर हैं तो फैक्ट्री बन्द करने अथवा कुछ मजदूरों को निकालने का नोटिस 60 दिन पहले लगा कर वरकरों को सूचना देनी होगी अन्यथा एक महीने की तनखा नोटिस पे के तौर पर देनी होगी।

— फैक्ट्री बन्द करने अथवा छँटनी पर सर्विस के प्रति वर्ष पर 17 दिन के पैसे ग्रेच्युटी में, चाहे नौकरी के पाँच वर्ष भी पूरे नहीं किये हों। और नौकरी छूटने की क्षतिपूर्ति में 15 दिन के पैसे सर्विस के प्रति वर्ष पर कम से कम। इसी को 32 दिन वाला हिसाब कहते हैं। वैसे नौकरी छूटने की क्षतिपूर्ति में 15 दिन सर्विस के प्रति वर्ष के स्थान पर कई फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 30 दिन, 50, 70, 90 दिन के पैसे लिये हैं।

— रिजाइन लिखने पर नोटिस पे का एक पैसा नहीं। इस्तीफा लिखने पर नौकरी छूटने की क्षतिपूर्ति में एक पैसा नहीं। नौकरी 5 वर्ष से कम की है तो रिजाइन लिखने पर ग्रेच्युटी में एक पैसा नहीं।

यह कम्पनियों के अपने कानून हैं।

इसलिये कम्पनियाँ वरकर को इस्तीफे लिखने को कहती हैं।

लेकिन मजदूर रिजाइन क्यों लिखते हैं ?

✶ **सरवेल** (डी-6/1 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में 30 अप्रैल को कम्पनी ने फैक्ट्री बन्द करने का नोटिस लगाया। मैनेजिंग डायरेक्टर 31 मई को फैक्ट्री आया और बोला, "जो हिसाब लेना चाहते हैं वो रिजाइन लिख दें।"

बीस वर्ष सर्विस वालों ने इस्तीफे लिख दिये। छह वरकर जिनकी 4 वर्ष सर्विस थी उन्होंने भी रिजाइन लिख दिये।

50 मजदूर थे। रिजाइन लिखने के कारण किसी की भी एक महीने की नोटिस पे नहीं बनी। इस्तीफे लिखने के कारण नौकरी छूटने की क्षतिपूर्ति में एक पैसा भी किसी मजदूर को नहीं मिला। रिजाइन लिखने के कारण 4 वर्ष की सर्विस वाले 6 मजदूरों को ग्रेच्युटी में 68 दिन के पैसे की जगह एक पैसा भी नहीं मिला।

✶ **गुप्ताएग्जिम** (45 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री बन्द करनी है कह कर मैनेजमेन्ट ने थोड़े-थोड़े करके मजदूरों से इस्तीफे लिखवाना शुरू किया। सब मजदूरों के रिजाइन 20 अगस्त तक कम्पनी के पास। नोटिस पे, नौकरी छूटने की क्षतिपूर्ति, 5 वर्ष से कम सर्विस वालों की ग्रेच्युटी सब हवा हो गई, कम्पनी की जेब में गई। और काम किये दिनों के पैसे, बोनस, छुट्टी के पैसों के चेक के लिये 25 अगस्त को वरकर फैक्ट्री गेट पर भीड़ लगाये थे।

✶ हिसाब के नाम पर **क्रियेटिव इम्पैक्स** (सी-55 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने रोज 4-5, 4-5 कर मजदूरों से इस्तीफे लिये। दो महीने में 1500 वरकरों के रिजाइन लैटर कम्पनी के पास। रिजाइन देने के बाद मजदूर पूछते ही रह गये : "किस हिसाब से 40 हजार ही बनाया ?"

रिजाइन नहीं लिखते तो हिसाब में तीन महीने की नोटिस पे, ग्रेच्युटी, नौकरी छूटने की क्षतिपूर्ति के पैसे मिलते। रिजाइन लिखते ही इनमें से अधिकतर गायब। कम्पनी ने प्रोडक्शन फरीदाबाद शिफ्ट कर दिया। अब कम्पनी का मुख्यालय तथा सैम्पलिंग विभाग ई-49/7 ओखला फेज-2 में है और सैम्पलिंग वरकरों को तनखा देरी से, जुलाई की 17 अगस्त को दी।

क्या रिजाइन के फेर में पड़ने से बचना नहीं चाहिये ?

टेम्परेरी वरकरों को निकालते समय भी कम्पनियाँ रिजाइन लिखवाती हैं। कारण क्या हैं ? हर रिजाइन लैटर में वरकर अपनी इस-उस आवश्यकता को कारण बताता है नौकरी छोड़ने का।

साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— शनिवार, 29 सितम्बर को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास शुक्रवार, 28 सितम्बर को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— सोमवार, 1 अक्टूबर को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में सितम्बर में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

मजदूर समाचार में योगदान

- ✶ अपने कदम और अपने साथियों के कदमों की जानकारियाँ सामुहिक करें।
- ✶ चर्चाओं में योगदान के लिये बाँटने वालों से प्रतियाँ ले जायें।
- ✶ फुर्सत मिले तो किसी भी रविवार को मजदूर लाइब्रेरी में आ कर विस्तार से जीवन चर्चा करें।
- ✶ आर्थिक सहयोग का मन हो तो जरूर दें। ज्यादा से ज्यादा छपने की क्षमता वाद-विवाद को फैलायेगी। इस योगदान में कोई भी राशि कम नहीं है।
- ✶ व्हाट्सएप पर खुल कर मैसेज भेजिये, हम जम कर पढ रहे हैं और बातों को फैला रहे हैं।
- ✶ आज मजदूर समाचार के पाठक अखबार में कविता, फलसफा, दर्शन, साहित्य और ज्ञान-चर्चा के विभिन्न रूप का आनन्द ले रहे हैं। आनन्द को उल्लास में बदलिये।

कम्पनियाँ अपने को बेदाग रखती हैं : हम निकालते नहीं, मजदूर खुद छोड़ जाते हैं। नौकरी छोड़नी है तो अवश्य इस्तीफा लिखें। लेकिन अगर कम्पनी निकाल रही है और आप वहाँ नौकरी करना चाहते हैं तो हरगिज रिजाइन नहीं लिखें। और मैनेजमेन्ट को नाचते देखें।

हरियाणा में 1 जुलाई 2018 से न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 8540 रुपये मासिक (8 घण्टे के 329 रुपये)
अर्ध-कुशल अ 8969 रुपये मासिक (8 घण्टे के 345 रुपये)
अर्ध-कुशल ब 9417 रुपये मासिक (8 घण्टे के 362 रुपये)
कुशल अ 9888 रुपये मासिक (8 घण्टे के 380 रुपये)
कुशल ब 10,382 रुपये मासिक (8 घण्टे के 399 रुपये)
उच्च कुशल श्रमिक 10,902 रुपये मासिक (8 घण्टे के 419 रुपये)
गार्ड 8969 रुपये मासिक (8 घण्टे के 345 रुपये)
शस्त्रधारी गार्ड 10,382 रुपये मासिक (8 घण्टे के 399 रुपये)
सफाईकर्मी 9104 रुपये मासिक (8 घण्टे के 350 रुपये)
ड्राईवर हल्का वाहन 10,382रुपये मासिक (8 घण्टे के 399 रुपये)
ड्राईवर भारी वाहन 10,902 रुपये मासिक (8 घण्टे के 419 रुपये)

कम कैसे कर देंगे ?

दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा मार्च 2017 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन खारिज कर दिये जाने के बाद उन कार्यस्थललों की कुछ बातें जहाँ मजदूर वह ग्रेड लागू करवा चुके थे।

★**ए आर इंजीनियरिंग वर्क्स** (22 ओखला इन्डस्ट्रीयल एस्टेट) फैक्ट्री के वरकर मार्च 2017 वाला ग्रेड लेते रहेंगे। हाई कोर्ट द्वारा खारिज करने के बाद तनखा कम नहीं करने देंगे।

★**कैपिटल रेडियो** (बी-6/4 ओखला फेज-2) फैक्ट्री मजदूर उच्च न्यायालय द्वारा नया ग्रेड खारिज कर दिये जाने के बाद तनखा कम करने की चर्चा होने ही नहीं देते।

★**एलकॉन इण्डिया** (एफ-1/6 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में हाई कोर्ट के आदेश के बाद मैनेजमेन्ट ने अगस्त से तनखा कम करने और पुराने ग्रेड से देने की घोषणा की। इस पर टी वी पार्ट्स बनाते 150 वरकरों ने प्रोडक्शन कम कर दिया है। फैक्ट्री में 25-30 लाइनें हैं और एक लाइन में 6 लोग हैं। एक लाइन पर 5000 का उत्पादन देते मजदूरों ने 8 अगस्त से 4000 देना शुरू कर दिया है।

★**हमदर्द लैबोरेट्रीज** (बी-317, 318 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में उच्च न्यायालय के फैसले के बाद 30 अगस्त को मैनेजमेन्ट ने तनखा के बारे में मीटिंग की। लेकिन मजदूरों को बताया नहीं कि क्या तय किया है। खाते में चेक भेजेंगे तब पता चल ही जायेगा।

★दिल्ली सरकार की संस्था **दिल्ली ट्रान्सपोर्ट कॉरपोरेशन** ने हाई कोर्ट के फैसले के बाद 4 अगस्त को ठेकेदार कम्पनी के जरिय रखे ड्राइवरों तथा कण्डक्टरों के वेतन कम करने की घोषणा की। सब टेम्परेरी ड्राइवरों और कण्डक्टरों ने वेतन कम करने के खिलाफ मिल कर गतिविधियाँ आरम्भ कर दी हैं।

कम्पनी से कोई नातेदारी है क्या ?

उत्पादन अथवा उत्पादन के लिये आश्यक कार्यों के लिये ही कम्पनियाँ मजदूरों को रखती हैं। काम और सिर्फ काम का ही रिश्ता वरकरों तथा कम्पनियों के बीच होता है।

कम्पनियों के कानून कम्पनियों के हित में होते हैं। इन कानूनों से मजदूर अपने हितों को नहीं साध सकते।

यह उत्पादन को प्रभावित करने की मजदूरों की क्षमता है जो कि दैनिक तौर पर मैनेजमेन्टों पर लगाम लगाती है। प्रत्येक वरकर, मजदूरों का हर समूह प्रोडक्शन पर दबाव डालने की अपनी कैपेसिटी का प्रयोग मैनेजमेन्टों पर दबाव बनाने के लिये करते हैं। हर कार्यस्थल पर, हर समय यह होता है।

एक-दूसरे के अनुभवों तथा विचारों को साझा करना मजदूरों की दबाव डालने की क्षमता को बढाता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं वरकरों के बीच बनते-बढते जोड़ और तालमेल जो कि दैनिक दबावों को बढाने तक सीमित नहीं हैं बल्कि कम्पनियों तथा उनके कानूनों को ही समाप्त करने को अग्रसर हैं।

कम्पनी ने यह कर दिया, मैनेजमेन्ट ने वह कर दिया का रोना छोड़ कर उत्पादन पर केन्द्रित होना बनता है। और हाँ, एक-दो-चार आगे हो कर नहीं बोलें ताकि वे कम्पनी के निशाने पर नहीं आयें। मैनेजमेन्ट के आक्रमण के लिये टारगेट नहीं बनें। सहज और शान्त रह कर हाथों से बोलना बढायें। उत्पादन पर असर बढाने से साहबों के माथों पर चोट लगती है, कम्पनियाँ पीछे हटती हैं।

★**बजाज मोटर** (22 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में हीरो दुपहियों के पार्ट्स बनाते हैं। फैक्ट्री में कानून अनुसार ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से था। डेढ साल पहले दुगुनी की जगह डेढा कर दिया। फिर वर्ष-भर से ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से कर दी है। सात महीने में ब्रेक पर हिसाब में बोनस और छुट्टियों के पैसे देते थे लेकिन साल-भर से दोनों बन्द कर दिये हैं....

★**सुपर एलॉय कास्ट** (62, 123, 141 सैक्टर-6 फरीदाबाद) फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। और 12 घण्टे में कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती। प्लॉट 62 फैक्ट्री में वरकर 40 रुपये नाइट अलाउन्स और प्रोडक्शन इन्सेन्टिव लेते हैं तो 123 तथा 141 वाली फैक्ट्रियों में क्यों नहीं......

टेम्परेरी में परमानेन्ट बल

इन्सटीट्युट ऑफ चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया (ICAI) के नोएडा सैक्टर-62 स्थित बड़े कार्यालय में 31 अगस्त को दोपहर 2 बजे नोएडा सैक्टर-1, आई टी ओ दिल्ली, और विश्वास नगर दिल्ली के भी टेम्परेरी वरकर एकत्र हो गये। करीब 350 वरकर जमा।

वर्षों से संस्थान में काम कर रहे टेम्परेरी वरकरों की साहब लोग सुनते ही नहीं थे। बड़े साहब दो मिनट का समय नहीं देते। लेकिन 31 अगस्त को एक बड़े साहब 3 बजे नीचे आये और बोले : "अपने कार्यस्थलों पर लौटो। हमें आपकी भावनाओं से कोई मतलब नहीं है। कोर्ट का कागज देखेंगे।" दस मिनट में साहब ऊपर चले गये।

कोलाहल। उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी का चूल्हा जले चाहे न जले। कोलाहल जारी। सब वरकर जमे रहे। चार बजे खुद नीचे आये बड़े साहब और बोले : "तनखा के बारे में मंगलवार (4 सितम्बर) को मीटिंग में तय करेंगे। कोशिश करेंगे कि बढायें। बढा नहीं पाये तो कम नहीं करेंगे। दो वर्ष से जिनकी वेतन वृद्धि नहीं की है उनके पाँच प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से पैसे बढायेंगे।"

सब वरकर कार्यास्थलों पर लौट गये और 31 अगस्त को पौने पाँच से साढे पाँच बजे तक काम किया।

नोएडा की भी रिपोर्टिंग दिल्ली में है इसलिये तनखायें दिल्ली में ग्रेड अनुसार हैं। वरकरों के संज्ञान में आया कि दिल्ली हाई कोर्ट के आदेश के बाद उनकी तनखा कम करेंगे। पता चल ही जाता है क्योंकि परमानेन्ट हों चाहे टेम्परेरी, आपस में जुड़े ही हैं। एच आर विभाग से कोई प्रतिक्रिया नहीं और बड़े साहबों के पास टेम्परेरी के लिये दो मिनट का समय नहीं। टेम्परेरी वरकर : "हमें खुद ही कुछ करना पड़ेगा।"

कोई लीडर नहीं। टेम्परेरी वरकरों ने 31 अगस्त को 10-11 बजे आपस में फोन पर बातें की। छुट्टियाँ पड़ रही हैं ; तनखा कम कर भेजने के बाद आई-गई वाली बात हो जायेगी ; दिक्कतें बढेंगी ; नोएडा सैक्टर-62 में बड़े कार्यस्थल पर 31 को ही इक्ट्ठे होने की बात उभरी। और नोएडा सैक्टर-1 तथा विश्वास नगर व आई टी ओ से वरकर नोएडा सैक्टर-62 पहुँचे थे।

इन्सटीट्युट ऑफ चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया केन्द्र सरकार के कॉरपोरेट मामलों के मन्त्रालय को रिपोर्ट करती है। संस्थान के सी. ए. मेम्बर हैं और फिर सी. ए. छात्र हैं। छात्रों के दाखिले से ले कर उनके फाइनल करने तक का कार्य टेम्परेरी वरकर करते हैं।

दूसरों के बही-खातों को कागजों में कानून अनुसार दिखाने का काम करते सी. ए. अपनी संस्थान को भी नियम-कानून का पालन करने वाली दिखाते हैं। जबकि, कार्य परमानेन्ट प्रकृति का है और सब वरकर टेम्परेरी हैं। ओवर टाइम होता है और ऑफिस बॉय को ओवर टाइम के 25 रुपये प्रतिघण्टा, डाटा इन्ट्री ऑपरेटर को 30 रुपये प्रतिघण्टा, मैनेजमेन्ट ट्रेनी को 43 रुपये प्रतिघण्टा ओवर टाइम के वाला कमाल सी. ए. संस्थान के सी. ए. करते हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।